Effect of Public Expenditure

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का विचार था कि सार्वजनिक व्यय अनुत्पादक श्रम के लिया किया गया भुगतान है और इसलिए इससे राष्ट्रीय उत्पादन में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होती। परन्तु यह विचार सही नहीं है। वास्तव में जिसप्रकार किसी एक व्यक्ति द्वारा किया गया व्यय दूसरे व्यक्ति की आय होती है, लोक व्यय का भी राष्ट्रीय आय तथा इसके वितरण पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। लोक व्यय का प्रभाव ~~अर्थव्यवस्था~~ आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न आयाम जैसे उत्पादन, वितरण तथा आर्थिक जीवन पर भिन्न तरीकों से पड़ता है।

उत्पादन पर प्रभाव

लोक व्यय से देश में उत्पादन की मात्रा प्रभावित होती है। दीर्घकालीन दृष्टि से लोक-व्यय का अधिकांश भाग प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उत्पादक होता है। व्यवसायिक तथा औद्योगिक कार्यों में किया गया लोक-व्यय प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक होता है। ~~किन्तु~~ डॉ. डाल्टन ने लोकव्यय के उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों को निम्नलिखित तरीकों से स्पष्ट किया है

1. कार्य करने तथा बचत करने की शक्ति पर प्रभाव

Effect ~~on~~ on ability to work and save

लोक ऋण से व्यक्तियों की कार्य करने तथा बचत करने की शक्ति अनेक प्रकार से प्रभावित होती है। लोक ऋण से अनेक व्यक्तियों को ऋण प्राप्त होती है जिससे उनकी क्रय-शक्ति बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुई क्रयशक्ति से अधिक वस्तुएँ खरीदने तथा जीवन-स्तर ऊँचा होने से लोगों की कार्यक्षमता बढ़ती है जिसके फलस्वरूप उत्पादन बढ़ जाता है, आय बढ़ती है और बचत करने की क्षमता बढ़ती है। निर्धन व्यक्तियों पर किया गया लोक-ऋण विशेष रूप से अधिक लाभदायक होता है।

2. कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रभाव
Effect on will to work and save

लोक ऋण दो प्रकार के होते हैं- वर्तमान से सम्बन्धित ऋण तथा भविष्य से सम्बन्धित ऋण। वर्तमान से सम्बन्धित ऋण के द्वारा अधिकतर व्यक्तियों को अपना जीवन-स्तर ऊँचा करने तथा अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इससे व्यक्तियों में काम करने तथा बचत करने की इच्छा में वृद्धि होती है। इसके विपरीत यदि लोक-ऋण से भविष्य में निरन्तर लाभ प्राप्त करने की आशा होती है तो लोगों की काम करने की और बचत

लोक व्यय से व्यक्तियों की कार्य करने तथा बचत करने की शक्ति अनेक प्रकार से प्रभावित होती है। लोक व्यय से अनेक व्यक्तियों को आय प्राप्त होती है जिससे उनकी क्रय-शक्ति बढ़ जाती है। इस बढ़ी हुई क्रयशक्ति से अधिक वस्तुएँ खरीदने तथा जीवन-स्तर ऊँचा होने से लोगों की कार्यक्षमता बढ़ती है जिसके फलस्वरूप उत्पादन बढ़ जाता है, आय बढ़ती है और बचत करने की क्षमता बढ़ती है। निर्धन व्यक्तियों पर किया गया लोक-व्यय विशेष रूप से अधिक लाभदायक होता है।

2. कार्य करने तथा बचत करने की इच्छा पर प्रभाव
Effect on will to work and save

लोक व्यय दो प्रकार के होते हैं- वर्तमान से सम्बन्धित व्यय तथा भविष्य से सम्बन्धित व्यय। वर्तमान से सम्बन्धित व्यय के द्वारा अधिकतर व्यक्तियों को अपना जीवन-स्तर ऊँचा करने तथा अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। इससे व्यक्तियों में काम करने तथा बचत करने की इच्छा में वृद्धि होती है। इसके विपरीत यदि लोक-व्यय से भविष्य में निरन्तर लाभ प्राप्त करने की आशा होती है तो लोगों की काम करने की और बचत

इच्छा पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

3. आर्थिक साधनों के स्थानान्तरण पर प्रभाव
Effects on diversion of economic resources between different uses and localities

---

लोक ऋण द्वारा आर्थिक साधनों का विभिन्न स्थानों एवं उपयोगों में हस्तान्तरण प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दो तरीकों से होता है। प्रत्यक्ष रूप में साधनों का हस्तान्तरण तब होता है जब राज्य जनता के धन का ऋण उन कार्यों पर करता है जिन्हें लोगों द्वारा व्यक्तिगत रूप में नहीं किया जा सकता। सुरक्षा सामाजिक प्रशासन, समाज-कल्याण आदि पर किया गया ऋण इसी प्रकार का है। परोक्ष रूप में लोक-ऋण लोगों में इस बात की रुचि उत्पन्न करता है कि वे अपने धन के ढंग को बदले। जैसे सिंचाई की सुविधाएँ प्रदान करके से कृषि व्यवस्था में परिवर्तन होता है, विद्युत एवं यातायात के विकास से औद्योगिक विकास प्रोत्साहित होता है

वर्तमान समय में लोक-ऋण के उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभावों को तब काम करते और बचत करने की शक्ति व इच्छा तथा आर्थिक साधनों के स्थानान्तरण के दृष्टिकोण से ही नहीं किया जाता बल्कि उसकी क्रियात्मक प्रकृति पर

भी ध्यान दिया जाता है। लोक व्यय के द्वारा उत्पादन, रोजगार, आर्थिक स्थायित्व, राष्ट्रीय आय, मुद्रा-प्रसार व मुद्रा संकुचन की दशाओं को प्रभावित किया जाता है।

वितरण पर प्रभाव

लोक व्यय के द्वारा वितरण की असमानताओं को कम किया जा सकता है। लोक व्यय से धनिकों की अपेक्षा गरीबों को बहुत अधिक लाभ होता है। सरकार द्वारा जब अपनी अधिकांश आय धनिकों से प्राप्त की जाती है और उसे गरीबों के कल्याण पर व्यय किया जाता है तो धन के वितरण की असमानताएं कम होती है।

डाल्टन ने करों की भाँति लोकव्यय को भी तीन प्रकार का बताया है - आनुपातिक, प्रगतिशील तथा प्रतिगामी।

आनुपातिक (~~Progressive~~) (Proportional) व्यय से व्यक्तियों को अपनी आय के अनुपात में लाभ प्राप्त होता है।

प्रगतिशील (Progressive) व्यय वह है- जिससे कम आय वाले व्यक्तियों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।

प्रतिगामी (Regressive) व्यय से कम आय वाले व्यक्तियों को कम लाभ प्राप्त होता है।

इसीप्रकार प्रतिगामी व्यय से धन का वितरण